

1971

war

चरण 3

युद्ध का घटनाक्रम, उत्कृष्ट रणनीति और अदम्य वीरता (3-16 दिसंबर 1971)

3 दिसंबर 1971 को पाकिस्तानी वायुसेना के अचानक हमले ने भारत को युद्ध में उतरने का बहाना दे दिया, जिसके लिए वह पहले से ही तैयार था। यह युद्ध सिर्फ 13 दिनों तक चला, लेकिन इस छोटे से समय में ही भारतीय सशस्त्र बलों ने अपनी उत्कृष्ट रणनीति, आपसी समन्वय और जवानों के अद्वितीय साहस का परिचय दिया। इस चरण को पूर्वी और पश्चिमी मोर्चे पर हुए प्रमुख अभियानों और वीर गाथाओं के आधार पर समझा जा सकता है।

पूर्वी मोर्चे पर: ढाका की ओर बिजली की गति से आगे बढ़ना

पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) युद्ध का मुख्य केंद्र था। भारतीय सेना का लक्ष्य पाकिस्तानी सेना को जल्द से जल्द आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर करना था ताकि मानवीय संकट को समाप्त किया जा सके। इस मोर्चे पर अपनाई गई रणनीति बेहद चतुर और प्रभावी थी।

* **तीन-तरफा आक्रमण:** भारतीय सेना ने मुक्ति वाहिनी के साथ मिलकर पूर्वी पाकिस्तान पर तीन दिशाओं से हमला किया:

* **उत्तरी मोर्चे से:** भारतीय सेना की टुकड़ियाँ, जिसमें 33वीं कोर शामिल थी, उत्तरी दिशा से प्रवेश कर रही थीं।

* **पूर्वी मोर्चे से:** 4 और 8 माउंटेन डिवीजनों ने पूर्वी दिशा से हमला किया।

* **पश्चिमी मोर्चे से:** मेजर जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा के नेतृत्व में ॥ कोर और IV कोर ने पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी दिशा से हमला किया।

यह तीन-तरफा हमला पाकिस्तानी सेना को भ्रमित करने और उनकी रक्षा प्रणाली को तोड़ने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

* **रणनीतिक बाईपास:** भारतीय सेना ने अपनी सबसे बड़ी रणनीति का परिचय देते हुए प्रमुख पाकिस्तानी गढ़ों और शहरों को सीधे हमला करने के बजाय, उन्हें चतुराई से बाईपास कर दिया। इस रणनीति ने दो महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा किया:

* **समय की बचत:** सीधे लड़ाई में उलझकर समय बर्बाद करने के बजाय, भारतीय सेना ने अपनी गति बनाए रखी और सीधे ढाका की ओर बढ़ी। यह रणनीति इतनी प्रभावी थी कि पाकिस्तानी सेना के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल ए.ए.के. नियाज़ी ने भी इसे स्वीकार किया।

* **दुश्मन को अलग-थलग करना:** बड़े शहरों को बाईपास करने से पाकिस्तानी सेना की विभिन्न टुकड़ियाँ आपस में संपर्क नहीं साध सकीं, जिससे उनका मनोबल टूट गया और वे पूरी तरह से अलग-थलग पड़ गईं। पाकिस्तानी सेना के पास सैनिकों को पुनर्गठित करने या बाहरी मदद प्राप्त करने का कोई मौका नहीं था।

* **हवाई और नौसेना का प्रभुत्व**: इस अभियान में भारतीय वायु सेना और नौसेना की भूमिका निर्णायक थी।

* **हवाई शक्ति**: युद्ध शुरू होने के कुछ ही घंटों के भीतर, भारतीय वायु सेना ने ढाका पर हमला करके पाकिस्तानी वायु शक्ति को लगभग पूरी तरह से नष्ट कर दिया। इसके बाद, भारतीय वायु सेना ने लगातार जमीनी सैनिकों को हवाई सहायता दी, जिससे उनकी प्रगति और तेज हो गई। ढाका में पाकिस्तानी गवर्नर हाउस पर हुआ हमला एक रणनीतिक मास्टरस्ट्रोक था, जिसने पाकिस्तानी प्रशासन को मनोवैज्ञानिक रूप से तोड़ दिया।

* **समुद्री नाकेबंदी**: भारतीय नौसेना ने पूर्वी पाकिस्तान की समुद्री सीमा की पूरी तरह से नाकेबंदी कर दी। इससे पाकिस्तानी सेना को बाहर से किसी भी तरह की मदद या आपूर्ति नहीं मिल सकी, जिससे उनका गोला-बारूद और भोजन जल्द ही खत्म होने लगा।

पश्चिमी मोर्चे पर: अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प

पश्चिमी मोर्चे पर भी भारतीय सेना ने पाकिस्तान को करारा जवाब दिया। हालांकि यह मोर्चा मुख्य लड़ाई का केंद्र नहीं था, लेकिन यहाँ भारतीय सैनिकों ने अपने साहस और दृढ़ संकल्प का अद्भुत प्रदर्शन किया।

* **लॉगेवाला की लड़ाई** (Battle of Longewala): यह युद्ध के सबसे प्रसिद्ध और वीरतापूर्ण संघर्षों में से एक है। 5 दिसंबर 1971 की रात को, राजस्थान के लॉगेवाला पोस्ट पर मेजर कुलदीप सिंह चांदपुरी के नेतृत्व में मात्र 120



भारतीय सैनिकों की एक कंपनी तैनात थी। उनके सामने लगभग 2000 पाकिस्तानी सैनिकों और 45 से अधिक टैंकों की एक पूरी बटालियन थी।

* **अदम्य साहस:** सीमित हथियारों और संख्या में कम होने के बावजूद, मेजर चांदपुरी और उनके सैनिकों ने पूरी रात बहादुरी से लड़ाई लड़ी। उन्होंने दुश्मन को यह विश्वास दिलाया कि उनके पास पर्याप्त सैनिक हैं, जिससे पाकिस्तानी सेना की गति धीमी हो गई।

* **वायु सेना का समय पर समर्थन:** अगली सुबह, भारतीय वायु सेना के हंटर्स और कैनबरा विमानों ने पाकिस्तानी टैंकों पर हमला किया और उनमें से अधिकांश को नष्ट कर दिया। यह भारतीय सेना और वायु सेना के बीच बेहतरीन समन्वय का एक अद्भुत उदाहरण था। मेजर चांदपुरी को इस वीरता के लिए महावीर चक्र से सम्मानित किया गया।

* **नौसेना का पराक्रम** (Operation Trident & Python): भारतीय नौसेना ने पाकिस्तान के सबसे बड़े बंदरगाह कराची पर दो साहसिक हमले किए।

* **ऑपरेशन ट्राइडेंट** (4 दिसंबर): इस ऑपरेशन में भारतीय मिसाइल नावों ने कराची बंदरगाह के पास पाकिस्तानी नौसेना के जहाजों को डुबो दिया और कराची के तेल डिपो को तबाह कर दिया। इस हमले ने पाकिस्तान की नौसेना की कमर तोड़ दी।



* **ऑपरेशन पाइथन** (8 दिसंबर): इस हमले में भारतीय नौसेना ने कराची पर एक और हमला किया, जिससे पाकिस्तान की समुद्री व्यापार और आपूर्ति पूरी तरह से ठप हो गई।

इन हमलों ने पाकिस्तान की नौसेना को पूरी तरह से पंगु बना दिया और उन्हें कोई भी जवाबी कार्रवाई करने में अक्षम कर दिया।